

سُورَةُ الْمُنَافِقُونَ

Surah 63 — Al-Munaafiqoon (The Hypocrites) · Medinan · 11 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا ۖ نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ ۗ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَكَاذِبُونَ

(ऐ रसूल) जब तुम्हारे पास मुनाफेकीन आते हैं तो कहते हैं कि हम तो इक़रार करते हैं कि आप यक्नीन खुदा के रसूल हैं और खुदा भी जानता है तुम यक्नीनी उसके रसूल हो मगर खुदा ज़ाहिर किए देता है कि ये लोग अपने (एतकाद के लिहाज़ से) ज़रूर झूठे हैं

2

اتَّخَذُوا ۖ أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً ۖ فَصَدُّوا ۖ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۗ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

इन लोगों ने अपनी क़समों को सिपर बना रखा है तो (इसी के ज़रिए से) लोगों को खुदा की राह से रोकते हैं बेशक ये लोग जो काम करते हैं बुरे हैं

3

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ ءَامَنُوا ۖ ثُمَّ كَفَرُوا ۖ فَأُطْبِعَ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ

इस सबब से कि (ज़ाहिर में) ईमान लाए फिर काफ़िर हो गए, तो उनके दिलों पर (गोया) मोहर लगा दी गयी है तो अब ये समझते ही नहीं

4

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَقُولُوا ۖ تَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ ۗ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسْنَدَةٌ ۚ ۖ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۗ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۗ قَتَلَهُمُ اللَّهُ ۗ أَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ

और जब तुम उनको देखोगे तो तनासुबे आज़ा की वजह से उनका क़द व कामत तुम्हें बहुत अच्छा मालूम होगा और गुफ्तगू करेंगे तो ऐसी कि तुम तवज्जो से सुनो (मगर अक्ल से खाली) गोया दीवारों से लगायी हुयीं बेकार लकड़ियाँ हैं हर चीख की आवाज़ को समझते हैं कि उन्हीं पर आ पड़ी ये लोग तुम्हारे दुश्मन हैं तुम उनसे बचे रहो खुदा इन्हें मार डाले ये कहाँ बहके फिरते हैं

5

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا ۚ يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا ۚ رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ
وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ

और जब उनसे कहा जाता है कि आओ रसूलअल्लाह तुम्हारे वास्ते मग़फ़ेरत की दुआ करें तो वह लोग अपने सर फेर लेते हैं और तुम उनको देखोगे कि तकबुर करते हुए मुँह फेर लेते हैं

6

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ

तो तुम उनकी मग़फ़ेरत की दुआ माँगो या न माँगो उनके हक़ में बराबर है (क्यों कि) खुदा तो उन्हें हरगिज़ बख़्शेगा नहीं खुदा तो हरगिज़ बदकारों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता

7

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا ۚ عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُّوا ۚ ۚ وَلِلَّهِ
خَزَائِنُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ

ये वही लोग तो हैं जो (अन्सार से) कहते हैं कि जो (मुहाजिरीन) रसूले खुदा के पास रहते हैं उन पर खर्च न करो यहाँ तक कि ये लोग खुद तितर बितर हो जाएँ हालाँकि सारे आसमान और ज़मीन के खज़ाने खुदा ही के पास हैं मगर मुनाफ़ेकीन नहीं समझते

8

يَقُولُونَ لئن رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ
وَلِرَسُولِهِ ۚ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ الْمُنْفِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ

ये लोग तो कहते हैं कि अगर हम लौट कर मदीने पहुँचे तो इज्ज़दार लोग (खुद) ज़लील (रसूल) को ज़रूर निकाल बाहर कर देंगे हालाँकि इज्ज़त तो ख़ास खुदा और उसके रसूल और मोमिनीन के लिए है मगर मुनाफ़ेकीन नहीं जानते

9

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ
فَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ

ऐ ईमानदारों तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुमको खुदा की याद से शाफिल न करे और जो ऐसा करेगा तो वही लोग घाटे में रहेंगे

10

وَأَنْفِقُوا[۝] مِنْ مَّا رَزَقْنَكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ[۝] قَرِيبٍ[۝] فَأَصَّدَّقَ وَأَكُن مِنَ الصَّالِحِينَ

और हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से क़बूल इसके (खुदा की राह में) खर्च कर डालो कि तुममें से किसी की मौत आ जाए तो (इसकी नौबत न आए कि) कहने लगे कि परवरदिगार तूने मुझे थोड़ी सी मोहलत और क्यों न दी ताकि खैरात करता और नेकीकारों से हो जाता

11

وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجْلُهَا[۝] وَاللَّهُ خَبِيرٌ[۝] بِمَا تَعْمَلُونَ

और जब किसी की मौत आ जाती है तो खुदा उसको हरगिज़ मोहलत नहीं देता और जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे खबरदार है